6

[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19
2023
2024

Your Roll No..............

G

Sr. No. of Question Paper : 5465

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : III

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहना सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'पूस की रात' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. शिल्प की दृष्टि से 'सिक्का बदल गया' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'जंगल जातकम्' कहानी की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) "चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जरमनों को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यो अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं।

अथवा

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रुठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थीय यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था। तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे।

(ख) मैं कुछ बोला नहीं मेरा मन जाने कैसे गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्जाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है।

अथवा

हीराबाई ने हिरामन के जैसा निश्छल आदमी बहुत कम देखा है। पूछा, 'आपका घर कौन जिल्ला में पड़ता है?' कानपुर नाम सुनते ही जो उसकी हँसी छूटी, तो बैल भड़क उठे। हिरामन

हँसते समय सिर नीचा कर लेता है।। हँसी बंद होने पर उसने कहा, "वाह रे कानपुर! तब तो नरकपुर भी होगा?" और जब हीराबाई ने कहा कि नरकपुर भी है, तो वह हँसते-हँसते दुहरा हो गया।

(ग) शाहनी चौंक पड़ी। देर-मेर घर में मुझे देर! आँसुओं को भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है-देर हो रही है, देर हो रही है। शाहनी के कानों में यही गूंज रहा है। देर हो रही है-पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी।

अथवा

सिद्धेश्ववी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है-जैसे कुछ काट रहा हो। पंखे को जरा और जोर से घुमाती हुई बोली, "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था कि कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा 'बाबूजी-बाबूजी' किए रहता है। बोला-बाबूजी देवता के समान हैं।"

(7)

[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No......2024......

Sr. No. of Question Paper : 512 **G**

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III – DSC-7

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10)

(क) देखकर तब विकल क्रौंची,

व्याध - चरित - अधर्म,

बह चली वाणी सहज

ले द्रवित उर का मर्म !

P.T.O.

अथवा

बताऊँ मित्र, तुम्हें वह क्या करती मिलेगी
सजा रही होगी देव देवियों के निमित्त नैवेद्य
या कि रही होगी आंक कल्पना प्रसूत विरह-खिन्न
मेरा यह शरीर
रही होगी पूछ पिंजड़े में टँगी मिठबोली मैना से....
गुणवन्ती बोल, आते भी हैं वह तुम्हें याद?
है जान से प्यारी थी!

(ख) ऐसो रामराइ अंतरजामी ।
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ।। रहाउ ।।
बसै घटाघट लीपन छीपै । बंधान मुकता जात न दीसै ।।1।।
पानी माहि देषु मुषु जैसा । नामें को सुआमी बीठलु औइसा ।।2।।

अथवा

मुझ पर वे चाहे हंसें, हजारों बोल कसें
हंस लेने दो - पर होगा इसका खेद किसे?
मैं होऊं शिव की सच्ची भक्त अगर मन से
क्या मैला होता मुकुर राख के गिरने से?

(ग) कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी काम से घर से बाहर जाते समय देखा, मेरी दुहिता द्वार के पास बेंच के ऊपर बैठकर अनर्गल बातें कर रही है और काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा मुस्कुराता हुआ सुन रहा है और बीच-बीच में प्रसंगानुसार अपना मतामत भी मिश्रित बांग्ला में व्यक्त कर रहा है। मिनी को अपने पंचवर्षीय जीवन की अभिज्ञता में पिता के अतिरिक्त ऐसा धैर्यवान श्रोता कभी नहीं मिला था।

अथवा

पीत वस्त्र, श्याम शरीर अति रूचिकर।
पंकज नयन मंद-मंद मुस्कान ।।
मणिमय मुकुट और कुण्डल झूलें।
उन्हें देख कामदेव को भी भूलें ।।
माणिक और मोतियों का हार।
चमकें ज्यूँ गगन के तारे अपार ।।
चरणों में मणि जडित कड़े हैं।
यह कृष्ण दास, शंकर कहे हैं ।।

2. संस्कृत लौकिक साहित्य के स्वरूप और उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

उर्दू साहित्य का विस्तार से विश्लेषण कीजिए ।

3. कालिदास कृत उत्तरमेघ में व्यक्त विरह-भावना पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

सप्तवर्ण: रामकाव्य का जन्म की भाषा शैली की विशेषताएँ लिखिए ।

4. संत नामदेव की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

ललद्यद के पदों की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

5. काबुलीवाला कहानी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक के कथ्य को स्पष्ट कीजिए ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY 2024 Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No...........

Sr. No. of Question Paper : 571 **G**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) कोऊ नहीं पकरत मेरो हाथ।
बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ।।
जाकी सरन गहत सोइ भारत सुनत न कोउ दुखगाथ।।
दीन बन्यौ इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ।
दिन-दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारौ नाथ।।

P.T.O.

अथवा

फूट बैर और कलह बुलाऊं, ल्याऊँ सुस्ती जोर।
घर-घर में आलस फैलाऊँ, छाऊँ दुख घनघोर ।। मुझे...
काफिर काला नीच पुकारूँ, तोडूँ पैर और हाथ।
दूँ इनको संतोष खुशामद, कायरता भी साथ ।। मुझे...
मरी बुलाऊँ देस उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न।
सबके ऊपर टिकस लगाउँ, धन है मुझको धन्न ।।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी ।।

(ख) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ, कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किन्तु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और सम्पत्ति रहने पर राजा को, पुरुष को बहुत-सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किन्तु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

अथवा

विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रान्तिपूर्ण बन्धन में बाँध दिया है। धर्म का उद्देश्य इस तरह पद दलित नहीं किया जा सकता। माता और पिता के प्रमाण के कारण से धर्म-विवाह केवल परस्पर द्वेष से टूट नहीं सकते; परन्तु यह सम्बन्ध उस प्रमाणों से भी विहीन है। और भी (रामगुप्त

को देखकर) यह रामगुप्त मृत और प्रव्रजित तो नहीं, पर गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राजकिल्विषी क्लीव है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा वंशीरव। यह कैसी यातना है- न सोते चैन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तर्रेखा धुँधली पड़ती जा रही है। और धुँधल के में रूप ले रहे हैं- कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफाई और सलीके का बेहद ख्याल रखा जाता है तो इसमें मेरा क्या दोष? वे सफल और व्यवस्था की मेरी इच्छा को घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफाई-वफाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफात को तिलांजलि दे दूँ, पर अपने इस प्रयास में कभी-कभी मुझे अपने आपसे घृणा होने लगती है। बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं। पर नहीं। मैं इन सब बहमों को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफरत करती हूँ।

2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेन्दुयुगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'भारत दुर्दशा' नाटक की समीक्षा कीजिए?

3. "'ध्रुवस्वामिनी' एक स्त्री विमर्श का नाटक है" -- इस कथन की पुष्टि कीजिए? (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए?

4. 'कथा एक कंस की' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

"'कथा एक कंस की' मंचन की दृष्टि से सफल नाट्य कृति है"- इस कथन की समीक्षा कीजिए?

5. 'उत्सर्ग' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए?

(9)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....2024....

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 515 **G**

Unique Paper Code : 2312102301

Name of the Paper : History of India – III (c. 750-1200)

Name of the Course : **Bachelor of Arts (Honours Course) History**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt any **four** questions.
3. **All** questions carry equal marks.
4. Answers may be written either in English or Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

P.T.O.

2. किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये ।

3. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।

4. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।

1. Evaluate the textual and inscriptional sources relevant for the period of your study.

आपके अध्ययन काल के लिए उपलब्ध साहित्यिक एवं अभिलेखीय साक्ष्यों का मूल्यांकन कीजिए।

2. Critically evaluate the 'Indian Feudalism' model for early Medieval India.

आरंभिक मध्यकाल के लिए 'भारतीय सामंतवाद' प्रारूप का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

Or

Analyse the usefulness of the 'Integrative Polity' model for understanding the early medieval India.

आरंभिक मध्यकालीन भारत को समझने के लिए 'समेकनकारी राज्यव्यवस्था' प्रारूप की उपादेयता का विश्लेषण कीजिए।

3. How far is the Segmentary State model a satisfactory explanation of the structure of the Chola state?

'विखंडीय राज्य' प्रारूप चोल राज्य की संरचना की किस हद तक संतोषजनक व्याख्या करता है?

Or

Is it rational to perceive the Ghaznavid invasions as 'foreign' invasions on 'India'? Explain in the light of contemporary sources.

क्या गज़नवी आक्रमणों को 'भारत' पर 'विदेशी' आक्रमणों के रूप में देखना तार्किक है? समकालीन स्रोतों के प्रकाश में व्याख्या कीजिए।

4. Describe the rise and growth of urban centres during c. 750-1200 CE.

लगभग 750 से 1200 ईस्वी के दौरान नगरीय केन्द्रों के उदय और संवृद्धि का वर्णन कीजिए।

5. Discuss different aspects related to the phenomenon of agrarian expansion during the period of your study. Also analyse its impact on the society.

आपके अध्ययन काल के दौरान कृषि के विस्तार से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं की चर्चा कीजिए।

6. Discuss the different strands of Bhakti Movement in South India. How far did it challenge the contemporary social structure?

दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कीजिए। समकालीन सामाजिक व्यवस्था को इसने किस हद तक चुनौती दी?

7. Analyze different regional styles of religious architecture that manifested in early medieval India.

आरंभिक मध्यकालीन भारत के विभिन्न धार्मिक स्थापत्य शैलियों का विश्लेषण कीजिए।

8. Write short notes on **any two** of the following :

निम्न में से किन्हीं दो पर लघु टिप्पणियां कीजिए :

(a) Origins of Rajputs

राजपूतों का उदय

(b) Temples and Brahmanas as symbols of political power

राजनैतिक सत्ता के प्रतीकों के रूप में मंदिर एवं ब्राह्मण

(c) Merchant guilds of south India

दक्षिण भारत की व्यापारी संघ

(d) Origins of Tantricism

तंत्रवाद के उदगम

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. 2024..........

G

LIBRARY

Sr. No. of Question Paper : 4007

Unique Paper Code : 12055302

Name of the Paper : Bhasha Aur Samaj

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. 'भाषा और समाज एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं'-इस कथन की युक्ति-युक्त समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

समाज भाषा विज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

2. भाषा और जातीयता पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

अथवा

भाषा और समुदाय के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

3. भाषायी अस्मिता के प्रमुख बिन्दुओं को विश्लेषित कीजिए। (15)

अथवा

भाषा और संस्कृति के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए।

4. भाषा सर्वेक्षण के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भाषा नमूनों का विश्लेषण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (15)

(i) भाषा का समाजशास्त्र

(ii) भाषा और समुदाय

(iii) भाषा और जेंडर

(iv) भाषा के नवीन प्रयोग

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No. 2024

Sr. No. of Question Paper : 5136 **G**

Unique Paper Code : 12053301

Name of the Paper : Vigyapan aur Hindi Bhasha

Name of the Course : **Hindi (Hons.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 75**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. विज्ञापन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

उपभोक्ता के मन पर विज्ञापन के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

2. विज्ञापन उत्पादन के विक्रय में किस प्रकार मदद करता है ? स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

विज्ञापन की व्यावसायिक भूमिका का रेखांकन कीजिए।

P.T.O.

3. विज्ञापन माध्यम का चयन करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। (12)

अथवा

कॉपी लेखन क्या है ? प्रिंट माध्यम के लिए कॉपी लेखन के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।

4. हिन्दी विज्ञापन में भाषा के चमत्कारित प्रयोग का उल्लेख कीजिए। (12)

अथवा

विज्ञापन की भाषा के विभिन्न पक्षों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए। (9,9,9)

(क) कल्याणकारी विज्ञापन

(ख) प्रिंट माध्यम

(ग) इलेक्ट्रॉनिक विज्ञापन की विशेषता

(घ) विज्ञापन की भाषा

(ङ) उत्पाद मार्केटिंग

(च) स्टोरी बोर्ड

question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.......2024.......

G

. of Question Paper : 5301

Paper Code : 12051302

of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल छायावाद तक)

of the Course : B.A. (Hons.) HINDI

er : III

घण्टे पूर्णांक : 75

DESHBANDHU COLLEGE ★ Kalkaji, New Delhi-19

लिए निर्देश

प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना क्रमांक लिखिए।

नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (8,7)

) वह जन्म-मरण का भ्रमण-भाण
मैं देख चुका हूँ अपरिमाण
निर्वाण हेतु मेरा प्रयाण,
क्या वात-दृष्टि, क्या शीत-घाम।
ओ क्षणभंगुर भव, राम-राम

P.T.O.

अथवा

जलता है यह जीवन-पतंग
जीवन कितना? अति लघु क्षण,
ये शलभ पुंज से कण कण
तृष्णा वह अनलशिखा बन
दिखलाती रक्तिम यौवन
जलने की क्यों न उठे उमंग?

(ख) वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे
काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय-निर्झर
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।

अथवा

यह मेरी गोदी की शोभा
सुख-सुहाग की है लाली।
शाही शान भिखारिन की है
मनोकामना मतवाली।

DESHBANDHU COLLEGE
L
Kalkaji, New Delhi-19

दीपशिखा है अन्धकार की
घनी घटा की उजियाली
ऊषा है यह कमल-भृंग की
है पतझड़ की हरियाली ।

2. 'यशोधरा' के मुख्य कथ्य पर विचार कीजिए । (12)

अथवा

'यशोधरा' की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए ।

3. जयशंकर प्रसाद की कविताओं में व्यक्त सौन्दर्य चेतना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

'अशोक की चिंता' कविता के आधार पर जयशंकर प्रसाद के अहिंसा संबंधी विचारों का मूल्यांकन कीजिए ।

4. छायावादी कविता के संदर्भ में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के योगदान का विश्लेषण कीजिए । (12)

अथवा

'बादल-राग' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

5. रामधारी सिंह दिनकर कृत 'रश्मिरथी' के तीसरे सर्ग की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

कथ्य और शिल्प के आधार पर 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता की विवेचना कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का निर्देशानुसार रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (6,6)

(क) स्वयं सुसज्जित करके क्षण में
प्रियतम को प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में
क्षात्र-धर्म के नाते (भावार्थ)

(ख) शीतल कोमल सी चिर कम्पन-सी,
दुर्ललित हठीले बचपन सी,
तू लौट कहाँ जाती है री-
यह खेल खेल ले ठहर-ठहर (बिम्ब विधान)

(ग) देव तुम्हारे कई उपासक
कई ढंग से आते हैं
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे
लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं। (भक्ति भावना)

(1000)